दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट–XI (प्रश्नपत्र–2)

DTVF/19(N-M)–HL-**HL11**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Ankit Mishra

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✗ | नहीं | ✓ |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 16/07/2019 ; Test-XI

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2019] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2019]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature): Ankit

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained):

टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) रोई गँवाए बारह मासा। सहस सहस दुख एक एक साँसा।

तिल तिल बरख बरख परि जाई। पहर पहर जुग जुग न सेराई।।

सो नहिं आवै रूप मुरारी। जासों पाव सोहाग सुनारी।।

साँझ भए झुरि झुरि पथ हेरा। कोनि सो घरी करैं पिउ फेरा?।।

दहि कोइला भइ कंत सनेहा। तोला माँसु रही नहिं देहा।।

रकत न रहा, विरह तन गरा। रती रती होइ नैनन्ह ढरा।।

पाय लागि जोरै धन हाथा। जारा नेह, जुड़ावहु नाथा।।

बरस दिवस धनि रोह कै, हारि परी चित झंखि।

मानुष घर घर बूझि कैं, बूझै निसरी पंखि।।

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त पंक्तियाँ भक्तिकालीन कवि मलिक मुहम्मद जायसी के पद्मावत नामक महाकाव्य के नागमती विरह खण्ड से उद्धृत हैं। नागमती के पति एवं चित्तौड़ के राजा शासक, राजा रतनसेन के सिंहलद्वीप जाने के उपरान्त, नागमती का विरह वर्णन उपरोक्त पंक्तियों में किया गया है।

व्याख्या → नागमती कहती है कि उसने रो-रो कर बारह महीने बिता दिए हैं तथा उसकी एक-2 सांस उसके लिए अनेक-दुखों का कारण बनती जा रही है। नागमति के लिए एक-एक पल, एक-2 युग के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समान लंबा प्रतीत हो रहा है। पति के विरह में व्याकुल नागमति जलकर ~~कर~~ कोइला हो गई है तथा उसके शरीर में एक तोला भी माँस नही रह गया है।

काव्य-सौंदर्य

(1) बारह मासा वर्णन

(2) पति-वियोग में नागमती की शारीरिक अवस्थाओं का 'कोयला से तुलना', 'रक्त की अनुपस्थिति' आदि के माध्यम से अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन

(3) नागमती के विरह के माध्यम से मध्यकालीन नारी की उस स्थिति का वर्णन, जहाँ वह पति-~~के अध~~ के विरह को अभिशप्त है परंतु पति के पास एक से अधिक स्त्रियों से विवाह करने की छूट है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।

मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।

बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।

जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।

सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन विधि धरिबो।

सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त पंक्तियाँ सूरदास कृत एवं आ: रामचन्द्र शुक्ल द्वारा संकलित भ्रमरगीत सार से उद्धृत हैं।

व्याख्या →

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त पंक्तियाँ छायावादी काव्य के प्रमुख स्तंभ सूर्यकांत तिपाठी 'निराला' के 'राम-कि शक्ति पूजा' नामक काव्य से उद्धृत हैं।

व्याख्या → उपरोक्त पंक्तियों में राम-रावण युद्ध के बाद, जिसमें कि राम रावण को पराजित कर पाने में असफल रहे हैं, के बाद की स्थिति का वर्णन है। युद्ध में आशातीत सफलता न मिलने के बाद राम के मन में निराशा का भाव है। यही निराशा का भाव वातवरणीय स्थिति में भी व्याप्त हो रहा है। रात का समय है तथा आसमान अंधकार आवृत हुआ सा प्रतीत हो रहा है। अंधेरा इतना अधिक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है कि दिशा का भी ज्ञान नहीं हो पा रहा है। पवन भी बिलकुल शांत है तथा पर्वत और ~~जमीन~~ जमीन भी ध्यानमग्न से प्रतीत हो रहे हैं। इस शांति के बीच ~~पीछे~~ ~~सीधी~~ केवल विशाल समुद्र ही गर्जना कर रहा है तथा समस्त अंधेरे के बीच थोड़ा सा प्रकाश एक जलते हुए मशाल की वजह से है।

काव्य-सौंदर्य →

(1) भाषायी संक्रमण को पीछे छोड़ते हुए परिष्कृत एवं परिमार्जित हिन्दी भाषा का प्रयोग

(2) कविता में नाटक की अनुभूति.

(3) दृश्य एवं श्रव्य बिंब की अनुभूति

(4) राम के मन की अनुभूतियों का प्रकृति की अवस्था के माध्यम से वर्णन जैसे 'घोर अंधकार के बीच में भी ~~'~~ 'केवल जलती मशाल'।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) आनन्ददात्री शिक्षिका है सिद्ध कविता-कामिनी,
है जन्म से ही वह यहाँ श्रीराम की अनुगामिनी।
पर अब तुम्हारे हाथ से वह कामिनी ही रह गई,
ज्योत्स्ना गई देखो, अँधेरी यामिनी ही रह गई!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त पंक्तियाँ आधुनिक युग के कवि मैथिलीशरण गुप्तजी के भारत-भारती नामक पुस्तक से उद्धृत हैं। यहाँ कवि कविता के उस स्वरूप की चर्चा कर रहे हैं जहाँ वह मनोरंजन का एक माध्यम रह गई है।

व्याख्या → कविता कवि के भावों की ही शाब्दिक अभिव्यक्ति होती है। प्राचीन काल से ही महापुरुषों एवं संतों ने अपने उदात्त भावों एवं विचारों को कविता के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। परंतु एक ऐसा समय भी आया जब कविता केवल नायिका के शृंगार वर्णन तक ही सिमट कर रह गई। उसने अपने उदात्त भावों को त्याग दिया। गुप्त जी ऐसे कवियों को आड़े हाथ लेते हुए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कहते हैं कि जो कविता 'श्रीराम की अनुगामिनी' थी वह अब ऐसे लोगों के हाथों में पड़कर सिर्फ 'कामिनी' ही रह गई है।
गुप्त जी इन कवियों को यह संदेश दे रहे हैं कि –
"केवल न मनोरंजन कवि का धर्म होना चाहिए"

काव्य-सौंदर्य →
(1) सीधी-सरल एवं अभिधात्मक शैली का प्रयोग
(2) कविता को 'मनोरंजन का माध्यम' मात्र मानने वाली परंपरा का खंडन करने का प्रयत्न

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'सूरसागर में वर्णित गोपियों का विरह बैठे-ठाले का धंधा है।' इस अभिमत के पक्ष या विपक्ष में अपना तार्किक मत प्रस्तुत कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरबा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त पंक्तियाँ मलिक मुहम्मद जायसी कृत पद्मावत के नागमती वियोग खण्ड से उद्धृत हैं। रतनसेन के सिंहलद्वीप चले जाने ~~की~~ ~~छम~~ के बाद विरह व्याकुल नागमती की अवस्था का वर्णन यहाँ किया गया है।

व्याख्या → रतनसेन सिंहलद्वीप में है और नागमती चित्तौड़ में पति से दूर और अकेली। भादौं का महीना आ गया है है और भादौं की अंधेरी रात अकेले बिताना नागमती के लिए कष्टकारी हो रहा है इसी प्रकार मास-दर-मास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बीतता जा रहा है और माघ का महीना आ गया है। माघ में बरसात झमझमाकर हो रही है और नागमती के दोनों आँखों से आँसू वैसे ही टपक रहे हैं जैसे की बरसात का पानी घर की छत के अगले हिस्से से टपक रहा है।

काव्य सौंदर्य —

① बारह मासा वर्णन के माध्यम से नायिका की स्थिति को दर्शाया है।

② ठेठ अवधी शब्दावली का प्रयोग। जैसे - 'झँकोरि', 'चुवाँहि'

③ राजपरिवार की स्त्री का वियोग एक सामान्य सी स्त्री के रूप में अद्भुत है। विरह की दशा नागमती में इतनी सघन तरीके से अलक्ष्य है कि उसे अपने राजसी सुविधाओं का भान ही नहीं रह जाता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त-तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा-मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार,
चमकतीं दूर ताराएँ ज्यों हो कहीं पार।

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त पंक्तियाँ सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के 'राम-कि-शक्तिपूजा' नामक कविता से उद्धृत हैं। युद्ध के बाद संध्या में चर्चा के दौरान राम की शारीरिक अवस्थाओं का वर्णन उपरोक्त पंक्तियों में किया गया है।

व्याख्या → दिन के युद्ध के पश्चात राम अपनी सशस्त्र सेना के साथ छावनी की तरफ वापस आ गए हैं। राम आगे-2 हैं और बाकी लोग उनके पीछे। राम एक स्थान पर बैठे हैं। उनके बाल खुलकर उनके शरीर पर फैल गई है— पीठ पर, बाहुओं पर और सीने पर। इस समय राम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को देखकर ऐसा ही लग रहा है जैसे किसी पर्वत पर निराशा का अंधकार फैला हुआ हो। ~~यहाँ पर राम~~

काव्य सौंदर्य → यहाँ पर राम का शारीरिक चित्रण बिलकुल वैसा ही है, जैसा कि निराला का खुद का शरीर था — बड़े और बिखरे बाल, बलिष्ठ शरीर आदि। इससे यह प्रतीत होता है जैसे 'राम की शक्तिपूजा' के राम स्वयं निराला ही हों।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(घ) जिन श्रेष्ठ सौधों में सुगायक श्रुति-सुधा थे घोलते,
निशि-मध्य, टीलों पर उन्हीं के आज उल्लू बोलते!
"सोते रहो हे हिन्दुओ! हम मौज करते हैं यहाँ,"
प्राचीन चिह्न विनष्ट यों किस जाति के होंगे कहाँ?

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त पंक्तियाँ मैथिली शरण गुप्त जी के भारत-भारती नामक काव्य से उद्धृत है। यहाँ गुप्त जी हिंदू जाति के पतन के कारणों पर चर्चा कर रहे हैं

व्याख्या → हिंदू धर्म में भगवद्-भजन आदि के श्रवण कि परंपरा रही है प्राचीन पुराणों तथा धर्म ग्रंथों आदि का पठन-पाठन तथा श्रवण अब नहीं हो रहा है। जिन ऊँचे स्थानों पर बैठकर यह सब किया जाता था, वहाँ अब रात में उल्लू बैठते हैं। गुप्त जी कहते हैं कि हिंदू जाति निद्रावस्था में है, वह सो रही है उसने अपने पुरानी परंपराओं को भुला दिया है और हिंदू

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

जाति का पतन इसी का परिणाम है।

कला-सौंदर्य

① हिन्दू धर्म में व्याप्त होगई कुरीतियों की जड़ों को पहचानने की कोशिश की गई है।

②

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मेरे हार गए सब जाने-माने कलावंत,
सबकी विद्या हो गई अकारथ, दर्प चूर,
कोई ज्ञानी गुणी आज तक इसे न साध सका।
अब यह असाध्य वीणा ही ख्यात हो गई।
पर मेरा अब भी है विश्वास
कृच्छ-तप वज्रकीर्ति का व्यर्थ नहीं था।
वीणा बोलेगी अवश्य, पर तभी।
इसे जब सच्चा स्वर-सिद्ध गोद में लेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त पंक्तियाँ 'अज्ञेय' के 'असाध्यवीणा' नामक कविता से उद्धृत है। वज्रकीर्ति का वीणा अभी तक कोई साध नहीं सका है, और इसी स्थिति का वर्णन राजा प्रियंवद से इन पंक्तियों के माध्यम से कर रहा है।

व्याख्या → राजा कहता है कि उसके सभी कलावंतों ने वीणा को साधने की कोशिश की, परंतु कोई कर न सका। सभी कलावंतों की विद्या किसी काम की नहीं रह गई

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तथा उन ~~सबका~~ सभी का अपनी विद्या का दर्प चूर-2 हो गया है स्थिति ऐसी हो गई है कि किसी के न साध पाने की वजह से अब यह वीणा 'असाध्यवीणा' के नाम से ही प्रचलित हो गई है

परंतु राजा को अभी भी विश्वास है कि वीणा का निर्माण करने वाले वज्रकीर्ति का तप व्यर्थ नहीं जाएगा और कोई इसे वीणा को जरूर साध लेगा

काव्य-सौंदर्य

① कविता पर जैन-बौद्धमत का प्रभाव

② कविता के माध्यम से अज्ञेय नें अपना काव्योद्देश्य भी प्रस्तुत किया है

③ अज्ञेय अपने शुरुआती दौर मे आध्यात्मिक प्रवृत्ति के नहीं ~~थे~~ थे, परंतु यहाँ आध्यात्मिकता का तत्व प्रबल है इससे कवि की संवेदना के विकासोन्मुखी होने का पता चलता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) कबीर के काव्य की प्रासंगिकता पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कबीर एक ऐसे कवि हैं जो वर्तमान में इतने अधिक प्रासंगिक हैं जितने कि वास्तव वह कभी भी नहीं रहे होंगे।

कबीर काल की एक प्रमुख विशेषता है उनकी तार्किकता। कबीर पढ़े लिखे नहीं थे, परंतु उनकी बातें हवा-हवाई न होकर बेहद तार्किक होती थी। आज जब हम विज्ञान और तकनीक के युग में जी रहे हैं तब तार्किकता अति महत्वपूर्ण है। कबीर सीधे-2 भले ही विज्ञान और प्रौद्यो-गिकी की बातें न करते हैं हों पर तार्किकता कहीं न कहीं वैज्ञानिक चेतना का परिचायक है।

वर्तमान समय में धार्मिक टकराव संभवतः उस स्तर पर हैं जितने की पहले कभी नहीं हुए। हिंदू, अपने को श्रेष्ठ साबित करने की होड़

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में हैं तो मुसलमान खुद को इसी प्रकार अन्य धर्म भी खुद को औरों से बेहतर और श्रेष्ठ साबित करने की होड़ में हैं। ऐसे में कबीर इन सब को इन्हीं धार्मिक आडंबरों से अवगत कराते हैं।

→ "ता चढ़ मुल्ला बांग दे, क्या
खुदा बहरा है"

→ "पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहार।
ताते ते चाकी भली पीस खाए संसार"

कबीर ऊँच-नीच में विश्वास करने वाले नहीं हैं। वह मानव मात्र की समानता में विश्वास रखते हैं। वर्तमान समय में जब जाति प्रथा रह-रहकर किसी न किसी रूप में सामने आ जाती है तो कबीर और भी प्रासंगिक हो जाते हैं। दलित समुदाय के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लोगों पर प्रताड़ना की खबरें आए दिन समाचार पत्रों की सुर्खियां बनती हैं, तो कबीर प्रासंगिक हो उठते हैं।

वर्तमान युग भागम-भाग का युग है, प्रतिस्पर्धा का युग है। हर कोई एक दूसरे को पीछे छोड़कर जल्दी-से जल्दी सबकुछ पा लेना चाहता है। व्यक्ति समय से पूर्व ही बहुत कुछ पा लेना चाहता है। परंत कबीर इस मत के समर्थक नहीं हैं। वह धैर्य में विश्वास रखते हैं क्योंकि यह धैर्य मानसिक शांति के लिए आवश्यक है।

"धीरे-2 रे मना, धीरे सबकुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।।"

वर्तमान पीढ़ी दौड़ में पड़कर मानसिक शांति को खो चुकी है। ऐसे में मानसिक शांति कैसे मिलेगी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

यह कबीर हमें सिखलाते हैं।

कबीर गुरु के महत्व को भी स्थापित करते हैं। वो कहते हैं कि -

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागूं पाय
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविंद दियो मिलाय"

वर्तमान समय में जब ज्ञान की अनेक बातें इंटरनेट के माध्यम से सहज ही उपलब्ध हैं तब भी गुरु का महत्व कम नहीं हुआ है, क्योंकि इंटरनेट पर ज्ञान वर्धक बातें भी गुरु ही डालते हैं। गुरु का स्वरूप भले ही कुछ बदल गया हो पर गुरु का महत्व थोड़ा सा भी कम नहीं हुआ है, और संभवतः कभी होगा भी नहीं। ऐसे में गुरु की महिमा का वर्णन कर कबीर खुद की कविता कविताओं को चिरकाल के लिए प्रासंगिक बना देते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'जनसाधारण की सहज भावनाओं, समस्याओं से लेकर सामान्य जनजीवन तक की अभिव्यक्ति करती हुई नागार्जुन की कविता विशिष्ट व उदात्त की उपेक्षा व साधारण के प्रति प्रतिबद्धता की मिशाल पेश करती है।' इस मत से आप कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागार्जुन हिंदी के उन विशिष्ट कवियों में शुमार हैं जिनका समर्पण किसी विचारधारा के प्रति नहीं, बल्कि मनुष्य के प्रति है। उन्हें जब किसी विचारधारा में कुछ ऐसा तत्व मिलता है जो कि जनसाधारण की आवाज को मजबूत करता हो तो वो उसे अपना लेते हैं और जब कभी कोई ऐसी चीज होती है जो जनसाधारण को सेवा से ~~विचलित~~ अलग होरही हो तो उसे त्याग भी देते हैं —

"क्या है दक्षिण, क्या है वाम।
जनता को रोटी से काम॥"

नागार्जुन संभवतः इकलौते ऐसे कवि हैं जो 'भुट्टा' और 'गिलहरी' जैसी विषयों पर भी कविता लिखते हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

नागार्जुन सिर्फ 'गुलाब' का वर्णन करने वाले कवि नहीं हैं, नागार्जुन जनसाधारण की भावनाओं से गहराई से जुड़े हैं। यही वजह है कि उन्हें संभ्रता खेत में काम करने वाली स्त्री के माथे पर भी दिखाई देती है।

नागार्जुन सामान्य जनजीवन की समस्याओं से भी परिचित हैं और उसका व्यवहारिक समाधान खोजने का प्रयत्न भी करते हैं।

"अकाल और उसके बाद" नाम नागार्जुन की कविता इसी का परिचायक है

"कई दिनों तक चूल्हा रोया चक्की रही उदास।"

ऐसी स्थिति में जब कई दिनों के बाद घर में खाना आता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तो नागार्जुन लोगों के विद्रोह करने और क्रांति को प्रसारित करने के लिए नहीं कहते हैं। वे अभी कई दिनों की भूख के प्रति संवेदनशील हैं। ऐसे में जब आलोचक उनसे उनकी विचारधारा को लेकर प्रश्न पूछते हैं तो वो कहते हैं —

"जनता मुझसे पूछ रही है, क्या बतलाऊँ।
जनकवि हूँ, मैं साफ कहूँगा, क्यों हकलाऊँ।।"

नागार्जुन का संपूर्ण काव्य कर्म जनसाधारण की सहज भावनाओं की ही अभिव्यक्ति है तथा जनसाधारण के प्रति नागार्जुन की प्रतिबद्धता की मिशाल पेश करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "'ब्रह्मराक्षस' अस्तित्ववादी मान्यताओं और खंडित व्यक्तित्व का प्रतीक है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

'ब्रह्मराक्षस' कविता एक ऐसे पात्र की कविता है जो 'समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों' और 'अपने व्यक्तिगत जीवन' के द्वंद्व से जूझ रहा है। वस्तुतः यह कविता द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरांत ~~विकसित~~ विकसित 'अस्तित्ववादी' दृष्टिकोण से कुछ हद तक प्रभावित सी प्रतीत होती है। द्वितीय विश्वयुद्ध में 3 लाखों लोगों की जान गई तथा लाखों लोगों ने मृत्यु को बहुत नजदीक से देखा। बहुत बड़ी संख्या ऐसे लोगों की भी रही जो मरते-2 बच गए थे। इस पूरी पीढ़ी के मन में जो एक चीज घर कर गई थी वह यह कि 'जीवन बहुत क्षणिक है'। इस पूरी पीढ़ी में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this spac

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परंपराओं, मान्यताओं आदि को ठेंगा दिखाकर जिंदगी अपनी शर्तों पर जीना शुरू किया।

'ब्रह्मराक्षस' कविता का लेखनकाल भी, उसी समय का है अत: इस कविता पर अस्तित्ववाद का असर है परन्तु मुक्तिबोध मूल रूप से एक मार्क्सवादी लेखक हैं जो कि पूर्णत: समाज के प्रति समर्पित हैं।

इन दो विरोधाभासी विचारों का संगम कुछ ऐसा हुआ है कि एक खंडित व्यक्तित्व का उद्भव हुआ है

'ब्रह्मराक्षस' कविता का ब्रह्मराक्षस उसी खण्डित व्यक्तित्व का प्रतीक है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation